सूर्य की उपासना का पर्व
मकर संक्रांति

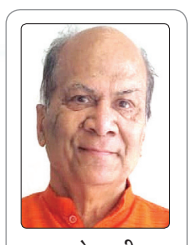

अशोक सूरी
आध्यात्मिक लेखक

कलयुग में पांच प्रत्यक्ष देवता हैं, जिनके हम साक्षात दर्शन कर सकते हैं- सूर्य, चंद्र, गंगा, यमुना और गोवर्धन पर्वत। इनमें सूर्य सबसे प्रमुख हैं। सूर्य तो सूर्य ही है, सूर्य सब ग्रहों का राजा है। सूर्य शास्वत है, सूर्य ही आत्मा है, पूरी सृष्टि सूर्य पर निर्भर है। सूर्य को सिंह राशि प्राप्त है। इस राशि में न कोई ग्रह उच्च का होता है और न ही कोई ग्रह नीच का होता है। सिंह राशि सूर्य का घर है। सूर्य सबसे अनुशासित ग्रह है। कभी किसी को भटकने नहीं देता। समय से उदय होगा और निश्चित समय पर ही अस्त होता है। सूर्य का छह माह उत्तर से दक्षिण और छह माह दक्षिण से उत्तर की ओर गमन रहता है, जिसे सूर्य का उत्तरायणी होना कहते हैं।

सूर्य का राशि में परिवर्तन को कहा जाता है संक्रांति

सूर्य सदा चलायमान ग्रह है, इसके सातों अश्व कभी विश्राम नहीं करते हैं। ज्योतिष के अनुसार 12 राशियां होती हैं और सूर्य प्रत्येक राशि में लगभग 1 माह विचरण करता है। सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में परिवर्तन को संक्रांति कहा जाता है। सभी राशियों में सूर्य अंग्रेजी कैलेंडर की 12 से 17 तारीख के बीच राशि परिवर्तन करता है। सूर्य प्रतिदिन 24 घंटे में प्रत्येक राशि में भ्रमण करता है, परंतु सदैव 14 जनवरी (कभी-कभी 15 जनवरी) को मकर राशि में प्रवेश करता है। सूर्य ग्रह के मकर राशि में प्रवेश को ही मकर संक्रांति के रूप में मनाते हैं। मकर राशि का स्वामी शनि है। इससे पहले सूर्य बृहस्पति की राशि धनु राशि में विचरण करता है, जिसे खरमास कहते हैं। खरमास में शुभ कार्य करना वर्जित बताया गया है। जैसे ही सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है खरमास के बंधन समाप्त हो जाते हैं और मकर संक्रांति का शुभ पर्व प्रारंभ होता है। यह दिन सूर्य के उत्तराणी होने का संकेत है। मकर संक्रांति पर स्नान, दान एवं सूर्य को अर्घ्य देने की परंपरा है। खरमास एवं मकर संक्रांति से हम सीखते हैं कि जीवन में संयम और उत्सव अपने-अपने समय पर आवश्यक है।

संक्रांति के विभिन्न रूप

पौराणिक कथा के अनुसार इस दिन सूर्य देव अपने पुत्र शनि के घर (मकर राशि) मिलने जाते हैं, जो पिता-पुत्र के बीच संबंधों का प्रतीक भी है। भीष्म पितामाह ने अपना शरीर इसी दिन त्यागा था। ऐसी हिन्दू धर्म की मान्यता है कि उत्तरायणी सूर्य के समय शरीर त्यागने पर मोक्ष की प्राप्ति होती है। गंगाजी का पृथ्वी पर अवतरण व भागीरथ द्वारा अपने पितरों का तर्पण भी इसी दिन हुआ था। भारत वर्ष के विभिन्न प्रांतों में यह त्योहार अलग-अलग रूपों में मनाया जाता है। उत्तर भारत में जहां एक ओर गंगा स्नान एवं खिचड़ी का महत्व है, वहीं दक्षिण भारत में पोंगल के रूप में मनाया जाता है। पश्चिमी भारत में पतंग उत्सव के रूप में मनाते हैं। पूर्वी राज्यों में इसे बिहू के रूप में मनाया जाता है, जिसमें सामुदायिक सदभाव और भोज का आयोजन किया जाता है। बंगाल में गंगा सागर का वर्ष में एक बार मनाया जाने वाला मेला भी इसी दिन लगता है। कहते हैं..."सारे तीर्थ बार-बार, गंगा सागर एक बार"। पंजाब में मकर संक्रांति से एक दिन पूर्व लोहड़ी का पर्व मनाया जाता है, इस उत्सव में भी तिल, गुड़ खाने व बांटने का विशेष महत्व है। मकर संक्रांति दान का भी पर्व है-इस दिन तिल, गुड़, गर्म वस्त्र, खिचड़ी, गोदान आदि दान करने से पापो का क्षय होता है और सुख-समृद्धि की वृद्धि होने की मान्यता है।

सकारात्मकता का संदेश

मकर संक्रांति का पर्व हमें "गुड़-तिल खाओ मधुर-मधुर बोलो" का संदेश समाज को देता है। वर्ष के आरंभ में आने वाला यह पर्व "सर्वे भवंतु सुखिना:" सभी के सुंदर जीवन की कामना करता है। यह पर्व हमें सामाजिक रूप से जोड़ता है और आपसी सहयोग की भावना को मजबूत करता है। मकर संक्रांति के पश्चात समय धीरे-धीरे शुभता की ओर अग्रसर होता है। इस पर्व के उपरांत मौसम में परिवर्तन भी आने लगते हैं- शीत ऋतु की वापसी और बसंत ऋतु का आगमन होने लगता है। सूर्य के उत्तराणी होने से दिन बड़े होने लगते हैं और रात्रि छोटी होने लगती है। मकर संक्रांति का पर्व हमें सिखता है, जैसे सूर्य उत्तरायणी होकर प्रकाश बढ़ाता है- वैसे ही हमें अपने जीवन में सकारात्मकता बढ़ानी चाहिए।

राशियों पर पड़ने वाले प्रभाव और उपाय

आचार्य मधुरेंद्र पांडेय
ज्योतिष एवं वास्तु विशेषज्ञ

- **मेष राशि**- सूर्य लग्न भाव गोचर से आत्मविश्वास चरम पर रहेगा। सरकारी नौकरी में प्रमोशन, राजनीति-व्यापार में नेतृत्व उभरेगा, स्वास्थ्य उत्कृष्ट रहेगा, लेकिन अहंकार से बचें। पारिवारिक सम्मान बढ़ेगा।
  उपाय: प्रात: सूर्योदय पर तांबे लोटे से लाल चंदन-जल अर्घ्य दें (21 बार), 7 मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें, काले तिल-गुड़-गेहूं का दान करें।
  वास्तु: घर का मुख्य द्वार लाल रंग से सजाएं।
- **वृषभ राशि**- धन भाव सक्रिय से पुरानी पूंजी से लाभ होगा, नए आय स्रोत बनेंगे, वैवाहिक सुख मधुर, निवेश (संपत्ति-शेयर) शुभ। पारिवारिक यात्रा सुखद रहेगी।
  उपाय: सफेद वस्त्र-चावल-दूध का दान, 7 अनाज (गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, तिल, चावल) का दान दें। लक्ष्मी सूक्त का पाठ करें।
  वास्तु: धन कोण (उत्तर) की सफाई करें।
- **मिथुन राशि**- 12 वें भाव गोचर से अनावश्यक खर्च (यात्रा-चिकित्सा), विदेशी अवसर, लेकिन मानसिक अशांति-नींद विकार संभव। कानूनी विवाद लंबा खिंच सकता है।
  उपाय: नहाते समय काले तिल शरीर पर मलें फिर स्नान करें।
  वास्तु: दरवाजे पर काला क्रिस्टल लटकाएं।
- **कर्क राशि**- लाभ भाव से व्यापार-नौकरी उन्नति, जीवनसाथी-बच्चों का पूर्ण सहयोग, संतान शिक्षा में सफलता। धन संचय अच्छा रहेगा।
  उपाय: घी का दीपक मंदिर में जलाएं।
  वास्तु: मुख्य द्वार पर चंदन का लेप लगाएं।
- **सिंह राशि**- स्वराशि (5 वें भाव) गोचर से शत्रु नाश, न्यायालय-प्रतियोगिता जीत, संतान सुख, नेतृत्व भूमिका मजबूत। बचत-अभिरुचि बढ़ेगी।
  उपाय: कपड़े दान करें, तिल-तेल का दीपक मंदिर में जलाएं।
  वास्तु: अग्नि कोण (दक्षिण-पूर्व) स्वच्छ रखें।
- **कन्या राशि**- नवम भाग्य भाव से धार्मिक यात्रा-पिता संबंध सुधार, लंबी दूरी यात्रा सफल, निवेश फलदायी।
  उपाय: गुड़-तिल लड्डू का सूर्यदेव को भोग लगाकर बांटें। विष्णु सहस्रनाम का जाप करें।
  वास्तु: पूर्व-उत्तर कोण साफ करें और दरवाजे पर हरा क्रिस्टल लगाएं।
- **तुला राशि**- अष्टम भाव से अचानक लाभ, लेकिन स्वास्थ्य-रहस्य दोष, दीर्घायु योग। व्यक्तित्व आकर्षक बनेगा।
  उपाय: सूर्य गायत्री मंत्र का 108 बार जाप करें।
  वास्तु: मुख्य द्वार पर चावल के आटे से रंगोली बनाएं।
- **वृश्चिक राशि**- सप्तम भाव से वैवाहिक सुख चरम, व्यापार साझेदारी लाभ, धनागम, लेकिन वाद-विवाद सावधान।
  उपाय: कंबल-काले तिल ब्राह्मण को दान करें,
  वास्तु: दक्षिण-पश्चिम दिशा में खाली गमला रखें।
- **धनु राशि**- षष्ठम भाव से रोग-शत्रु-ऋण समस्या, नौकरी प्रतिस्पर्धा कठिन, पारिवारिक तनाव।
  उपाय: गाय व कुत्ते को रोटी-गुड़ खिलाएं।
  वास्तु: मकान का बरामदा साफ रखें। मुख्य द्वार पर पीला बल्ब लगाएं।
- **मकर राशि**- लग्न गोचर से करियर चरम उन्नति, संपत्ति खरीद-प्रतिष्ठा वृद्धि।
  उपाय: तिल गुड़ का दान करें।
  वास्तु: घर की उत्तर दिशा की सफाई करें और पूर्व दिशा में स्वास्तिक लगाएं।
- **कुंभ राशि**- 12 वें भाव से खर्च पर नियंत्रण, धीमी प्रगति, लेकिन स्थिरता अंत में।
  उपाय: कौवे को भोजन खिलाएं।
  वास्तु: घर की पश्चिम दिशा की सफाई करें। मुख्य द्वार पर ओम लिखें।
- **मीन राशि**- 11 वें लाभ भाव से आय वृद्धि, मित्र-भाई सहयोग, इच्छापूर्ति।
  उपाय: ब्राह्मण को वस्त्र दान करें।
  वास्तु: घर के पूर्वी हिस्से को सजाएं और साफ करें।

महत्वपूर्ण व्रत

षटतिला एकादशी-14 जनवरी

षटतिला एकादशी माघ मास के कृष्ण पक्ष में आती है। इस दिन तिल का विशेष महत्व होता है। इस दिन भगवान विष्णु के अलावा पितृ पूजन का भी विधान है। षटतिला एकादशी 14 जनवरी को मनाई जाएगी।

मकर संक्रांति -15 जनवरी

सूर्य मकर राशि में 14 जनवरी बुधवार को रात्रि 09:19 बजे से आएंगे। सूर्य उत्तरायण होंगे तथा खरमास समाप्त हो जाएगा। मकर सक्रांति का नियम है कि प्रदोष के बाद रात्रि में किसी भी समय संक्रति लगती है, तो उसका पुण्यकाल दूसरे दिन होता है। इस प्रकार मकर सक्रांति (खिचड़ी) का पर्व 15 जनवरी गुरुवार को मनाया जाएगा।

-आचार्य डॉ. प्रदीप द्विवेदी 'रमण'
आध्यात्मिक लेखक

बोधकथा

झूठे ब्रह्मज्ञान की सच्चाई

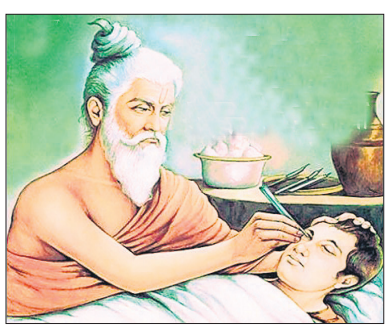

एक नगर में एक अत्यंत धर्मप्रिय और प्रजावत्सल राजा का शासन था। राजा अपनी प्रजा को परिवार के समान मानता था और उनके सुख-दुख में सदैव साथ खड़ा रहता था। दुर्भाग्यवश एक वर्ष नगर में भयंकर महामारी फैल गई। रोग इतना घातक था कि प्रतिदिन अनेक लोग इसकी चपेट में आकर मरने लगे और जो बचे, उनमें से अधिकांश अपंग हो गए। राज्य में कोई योग्य वैद्य न होने के कारण जनता त्रस्त हो उठी।

राजा ने प्रजा की दुर्दशा देखकर पड़ोसी राज्य से एक अनुभवी वैद्य को बुलवाया। वैद्य इस आशा से आया कि वह लोगों की सेवा करेगा और सम्मानजनक आजीविका भी अर्जित कर सकेगा। उसने दिन-रात अथक परिश्रम किया। अपनी विद्या और निष्ठा से कुछ ही दिनों में उसने महामारी पर काबू पा लिया। नगर में फिर से जीवन की चहल-पहल लौट आई। जब वैद्य ने लोगों से अपनी औषधियों का मूल्य मांगा, तो कुछ चतुर लोगों ने उसे ब्रह्मज्ञान का उपदेश देना शुरू कर दिया। वे कहने लगे-"हम सबमें ब्रह्म है, आपमें भी ब्रह्म है, दवा में भी ब्रह्म है। जब सब कुछ ब्रह्म ही है, तो फिर पैसे का क्या अर्थ?" भोला वैद्य उनके शब्दजाल में फंस गया। इस प्रकार लोगों को मुफ्त में इलाज कराने का बहाना मिल गया।

कुछ ही दिनों में वैद्य की स्थिति दयनीय हो गई। बिना पारिश्रमिक के उसका गुजारा कठिन हो गया। कई बार उसे भरपेट भोजन भी नसीब नहीं होता। अंतत: उसने अपने नगर लौटने का निर्णय किया। वह यात्रा की तैयारी ही कर रहा था कि उसी समय राजा का पुत्र गंभीर रूप से बीमार पड़ गया। राजवैद्य ने हर संभव प्रयास किया, किंतु राजकुमार की हालत में कोई सुधार नहीं हुआ। राजा को उस परदेशी वैद्य की याद आई। उसने तुरंत दूत भेजकर वैद्य को बुलवाया। वैद्य महल पहुंचा और राजकुमार की चिकित्सा आरंभ की। कुछ आराम तो मिला, पर बीमारी पूरी तरह दूर नहीं हुई। राजा ने चिंतित होकर कहा- "वैद्यजी, कोई ऐसी औषधि दीजिए जिससे मेरा पुत्र शीघ्र स्वस्थ हो जाए।" अवसर देखकर वैद्य ने कहा-"महाराज, ऐसी औषधि संभव है, किंतु उसके लिए मुझे कुछ ब्रह्मज्ञानियों का तेल चाहिए।" राजा ने सहज भाव से कहा-"यह कौन-सी बड़ी बात है? हमारे राज्य में तो अनेक ब्रह्मज्ञानी हैं।"

यह समाचार नगर में फैलते ही हड़कंप मच गया, जो लोग पहले ब्रह्मज्ञान का ढोंग करते थे, वे भय से छिपने लगे। कोई भी स्वयं को ब्रह्मज्ञानी बताने को तैयार नहीं था। सिपाही पूरे दिन नगर में घूमते रहे, पर हर व्यक्ति अनजान बनता रहा। अंतत: वैद्य ने दूसरी औषधि से राजकुमार को स्वस्थ कर दिया। राजा को सच्चाई समझ आ गई। उसने उन सभी लोगों को दरबार में बुलाया, जिन्होंने वैद्य से छल किया था। भयभीत लोगों ने वैद्य को उसका पूरा पारिश्रमिक दिया और आगे से झूठे उपदेश न देने की शपथ ली। इस कथा से हमें सीख मिलती है कि सच्चा ज्ञान वही है, जो आचरण में दिखाई दे। केवल दिखावटी उपदेश और स्वार्थी आदर्श अंतत: व्यक्ति को लज्जित ही करते हैं।

गढ़ मुक्तेश्वर स्थित प्राचीन गंगा मंदिर का रहस्य

भोले शिवशंकर की महिमा को समझ पाना वैसे, तो किसी के वश की बात नहीं। धर्मशास्त्रों में तो इस बात का उल्लेख मिलता ही है। वर्तमान समय में भी शिव साधकों और उपासकों के कई ऐसे उदाहरण भी देखने को मिलते हैं, जिन्हें देखकर लोग केवल श्रद्धावश शीश ही झुका पाते हैं। पुरातत्वविज्ञानियों ने भी ऐसे रहस्यों के आगे हार मान ली। अति पुरातन गढ़ मुक्तेश्वर गंगा मंदिर में स्थापित शिवलिंग पर प्रत्येक वर्ष एक अंकुर उभरता है, जिसके फूटने पर भगवान शिव और अन्य देवी-देवताओं की आकृतियां निकलती हैं। इस विषय पर गहन शोध कार्य भी हुआ, लेकिन शिवलिंग पर अंकुर का रहस्य आज तक कोई समझ नहीं पाया है।

गढ़ मुक्तेश्वर में जनश्रुति है कि मंदिर की सीढ़ियों पर अगर कोई पत्थर फेंका जाए, तो जल के अंदर पत्थर मारने जैसी आवाज सुनाई पड़ती है। ऐसा महसूस होता है कि जैसे गंगा मंदिर की सीढ़ियों को छूकर गुजरी हों। यह किस वजह से होता है यह भी आज तक कोई नहीं जान पाया है। गढ़ मुक्तेश्वर मंदिर का मुख्य रहस्य शिव पुराण की एक कथा में निहित है, जिसके अनुसार महर्षि दुर्वासा ने शिवगणों को उनके उपहास के लिए श्राप दिया था और फिर उन्हें गंगा के तट पर इस स्थान पर आकर मुक्ति मिली थी। इस कारण इस तीर्थ का नाम पहले 'गण मुक्तेश्वर' पड़ा, जो बाद में 'गढ़ मुक्तेश्वर' में बदल गया। इस रहस्य से जुड़े अन्य रहस्य हैं, जो मंदिर की प्राचीनता और आध्यात्मिक शक्ति से संबंधित हैं। शिवगणों को श्राप से मुक्ति: शिव पुराण के अनुसार, महर्षि दुर्वासा ने शिवगणों को पिशाच बनने का श्राप दिया था। पौराणिक मान्यता के अनुसार, भगवान की तपस्या के बाद गंगा ने आकर इन गणों को इस श्राप से मुक्ति दिलाई थी।

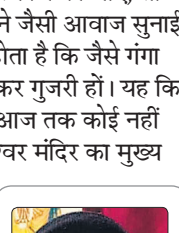

अनिल सुधांशु
ज्योतिषाचार्य

शिव वल्लभपुर से गढ़मुक्तेश्वर : यह माना जाता है कि इस तीर्थ का प्राचीन नाम 'शिव वल्लभपुर' था और यहीं पर शिवगणों को मुक्ति मिलने के कारण इसका नाम 'गण मुक्तेश्वर' पड़ा, जो धीरे-धीरे 'गढ़ मुक्तेश्वर' हो गया।

नृगकूप : मंदिर के पास एक प्राचीन बावड़ी है, जिसे 'नृगकूप' के नाम से जाना जाता है। इसके बारे में महाभारत में उल्लेख है कि राजा नृग श्राप के कारण गिरगिट बन गए थे और इस कूप में रहते थे। यह कूप आज भी 'नक्का कुआं' के नाम से प्रसिद्ध है। अन्य रहस्य : कुछ लोगों का मानना है कि इस मंदिर में शिवलिंग पर अंकुरित होते हैं, जिसकी व्याख्या वैज्ञानिक नहीं कर पाए हैं और पुजारी इसे स्थान की आध्यात्मिक शक्ति मानते हैं।

ऐतिहासिक महत्व : यह मंदिर महाभारत काल से भी जुड़ा हुआ है। ऐसा माना जाता है कि राजा परीक्षित अपनी मृत्यु के बाद मोक्ष की तलाश में इस स्थान पर आए थे।

पौराणिक कथा

शाप और कर्ण की नियति

द्वापरयुग की बात है। सूर्यपुत्र कर्ण अपने पराक्रम और वीरता के लिए प्रसिद्ध थे। एक दिन वे शिकार के उद्देश्य से घने वन में निकले। प्राचीन काल में राजा और क्षत्रिय प्रायः हिंसक पशुओं का शिकार करते थे, ताकि वे नगरों और ग्रामों में प्रवेश कर जन-धन की हानि न कर सकें। इसी कर्तव्यभाव से प्रेरित होकर कर्ण भी जंगल में विचरण कर रहे थे।

वन के भीतर घूमते हुए कर्ण को झाड़ियों के पीछे किसी हिंसक पशु की आहट प्रतीत हुई। बिना लक्ष्य को भली-भांति देखे और विचार किए, उन्होंने तुरंत अपना धनुष उठाया और बाण छोड़ दिया। दुर्भाग्यवश वहां कोई क्रूर पशु नहीं, बल्कि एक ब्राह्मण की निरपराध गाय शांतिपूर्वक घास चर रही थी। बाण लगते ही गाय कुछ क्षणों में धराशायी हो गई और उसके प्राण निकल गए। यह दृश्य देखकर वह ब्राह्मण व्याकुल हो उठा। अपनी प्रिय गाय को मृत देखकर वह शोक और क्रोध से भर गया। वह वहीं बैठकर विलाप करने लगा। जब कर्ण को अपने कार्य का भयानक परिणाम ज्ञात हुआ, तो उनका हृदय भी पीड़ा से भर उठा। वे ब्राह्मण के पास गए, विनम्र होकर क्षमा याचना की और सांत्वना देने लगे, परंतु ब्राह्मण का दु:ख क्रोध में बदल चुका था। उसने कर्ण को दूर हटाते हुए कहा- "हे शक्तिमान कर्ण! अपने बल और वैभव के अहंकार में क्या तू यह भी भूल गया कि बिना लक्ष्य निश्चित किए शस्त्र नहीं चलाया जाता? तूने मेरी निरीह गाय की हत्या कर दी और अब क्षमा मांगता है। क्या तेरी क्षमा मेरी गाय को जीवित कर सकती है? मेरे घर बंधा उसका बछड़ा, जो अब भूख और पीड़ा से अपनी मां को पुकार रहा है, क्या उसकी वेदना तू मिटा सकता है?" कर्ण निरुत्तर हो गए, उन्होंने अपनी असमर्थता स्वीकार कर ली। तब क्रोध से कांपते हुए ब्राह्मण ने अपना कमंडल उठाया और कर्ण को शाप दिया- "हे कर्ण! जिस प्रकार तूने रथ पर सवार होकर मेरी निसहाय गाय का वध किया है, उसी प्रकार एक दिन अपने जीवन के सबसे भीषण युद्ध में तेरे रथ का पहिया धरती में धंस जाएगा। उस समय तू असहाय होकर मृत्यु को प्राप्त होगा।"

समय बीत गया। महाभारत का महायुद्ध आरंभ हुआ। कर्ण कौरवों की ओर से युद्ध कर रहे थे। रणभूमि में एक क्षण ऐसा आया जब परशुराम के शाप से वे अपनी दिव्य विद्याएं भूल गए और उसी समय ब्राह्मण के शाप के अनुसार उनके रथ का पहिया धरती में धंस गया। इस अवसर का लाभ उठाकर श्रीकृष्ण के संकेत पर अर्जुन ने कर्ण का वध कर दिया। इस प्रकार ब्राह्मण का शाप सत्य सिद्ध हुआ और यह घटना कर्म तथा नियति के अटल विधान का प्रमाण बन गई।